

पाठ 5

जीवन-मूल्य

इस पाठ से हम सीखेंगे—

- कबीर, रहीम और तुलसी के दोहों से मिलने वाली सीख।
- किसी के साथ छल-कपट करना ठीक नहीं है।
- दूसरों की पीड़ा समझने वाला महान होता है।
- जो जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।
- जो मुसीबत के समय साथ दे, वही सच्चा मित्र है।
- अपनी पीड़ा दूसरों से कहने पर लोग मजाक उड़ाते हैं।
- मीठे वचन बोलकर सबको अपने वश में किया जा सकता है।
- जहाँ अपना मान-सम्मान न हो, वहाँ जाना उचित नहीं है।
- **ब** और **व** तथा **न** और **ण** वर्णों की पहचान व उनके प्रयोग में अन्तर।

कबीर के दोहे

मन काला तन ऊजरा, बगुला कपटी अंग।
तासों तो कौवा भला, तन-मन एकहि रंग॥

भावार्थ— बगुले का शरीर तो सफ़ेद है, लेकिन मन काला है। उसका उजला शरीर देखकर मछलियाँ उसे सज्जन समझ लेती हैं। परन्तु पास आते ही बगुला मछली का शिकार कर लेता है। कबीर कहते हैं कि उससे अच्छा तो कौवा है। उसका शरीर और मन दोनों काले हैं। उससे किसी को धोखा नहीं होता।



कबीर

कबिरा सोई पीर है, जो जानै पर पीर।
जो पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर॥

भावार्थ— कबीर कहते हैं कि वही व्यक्ति महान है, जो दूसरों की पीड़ा को महसूस करता है। जो दूसरों की पीड़ा नहीं समझता, वह ईश्वर को न मानने वाला और बेदर्द है।

करै बुराई सुख चहै, कैसे पावै कोय।
रोपै पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते होय॥

भावार्थ— जो व्यक्ति बुरे कर्म करके सुख पाना चाहता है, उसे सुख कैसे मिल सकता है। बबूल का पेड़ रोपने वाले को काँटे ही मिलेंगे, आम के फल नहीं मिल सकते। बुरे कर्मों का नतीजा भी बुरा ही होगा।

सजन सनेही बहुत हैं, सुख में मिलें अनेक।
बिपति पड़े दुख बाँटिए, सो लाखन में एक॥

भावार्थ— सुख के दिनों में तो चाहने वाले बहुत मिल जाते हैं, परन्तु मुसीबत पड़ने पर दुख बाँटने वाला या साथ देने वाला कोई लाखों में एक होता है।

रहीम के दोहे

जे गरीब पर हित करें, ते रहीम बड़ लोग।
कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मितार्ई जोग॥

भावार्थ— रहीम कहते हैं, जो गरीबों की मदद करते हैं, वे महान होते हैं। बेचारा सुदामा श्री कृष्ण की मित्रता के लायक कहाँ था। फिर भी उन्होंने सुदामा से बचपन की मित्रता पूरी तरह निभाई। उसकी मदद की। यह श्री कृष्ण का बड़प्पन था।



रहीम

रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार।
रहिमन फिर-फिर पोहिए, टूटे मुक्ताहार॥

भावार्थ— रहीम कहते हैं कि कोई सज्जन व्यक्ति अगर सौ बार भी रूठे तो उसे बार-बार मना लेना चाहिए। जैसे मोतियों का कीमती हार बार-बार टूटने पर भी हर बार मोतियों को चुनकर गूँथ लेते हैं, क्योंकि वह हार कीमती है। इसी तरह सज्जन व्यक्ति भी अनमोल होता है।

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़ै, जुड़ै गाँठ परि जाय॥

भावार्थ— रहीम कहते हैं कि प्रेम रूपी धागे को एक झटके से नहीं तोड़ देना चाहिए। एक बार टूट जाने पर वह फिर जुड़ेगा नहीं। अगर जुड़ भी गया तो उसमें गाँठ जरूर पड़ जाएगी। वह पहले जैसा नहीं हो पाएगा। अपने किसी मित्र या सगे-संबंधी से संबंध तोड़ने पर भी यही होता है। टूटा हुआ संबंध पहले जैसा फिर नहीं जुड़ पाता।

रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लेहै कोय॥

भावार्थ— रहीम कहते हैं कि अपने मन की पीड़ा को मन में ही छिपा कर रखो। दूसरे लोग आपकी पीड़ा सुनकर मज़ाक ही उड़ाएँगे, पीड़ा को बाँटने वाला या आपकी मदद करने वाला कोई नहीं मिलेगा।

तुलसी के दोहे

तुलसी मीठे बचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
बसीकरन इक मंत्र है, परिहरु बचन कठोर॥

भावार्थ— तुलसीदास जी कहते हैं कि मीठे वचन सुनकर सबको सुख पहुँचता है। मीठे वचन वशीकरण मंत्र की तरह हैं, जो सबको अपने वश में कर लेते हैं। इसलिए किसी से कठोर अथवा कड़वे वचन मत बोलो। कठोर वचन सबको कष्ट ही पहुँचाते हैं।



तुलसीदास

आवत ही हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।
तुलसी वहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह॥

भावार्थ— तुलसी का कहना है कि किसी के घर जाने पर अगर उसे खुशी न हो और आँखों से प्रेम न छलके तो ऐसे व्यक्ति के यहाँ भूलकर भी न जाइए। भले ही उसके यहाँ सोना बरसता हो।

काम क्रोध मद लोभ की, जौ लौं मन में खान।
तौ लौं पंडित मूरखौ, तुलसी एक समान॥

भावार्थ— तुलसी कहते हैं कि जब तक काम, क्रोध, घमंड और लालच का मन में वास है, तब तक विद्वान भी मूर्ख के समान ही है।

इनका मतलब जानिए—

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
ऊजरा	= उजला/सफ़ेद	बसीकरन	= वश में कर लेने वाला
पीर	= पीड़ा/महान व्यक्ति	परिहरु	= छोड़ दो
काफ़िर	= ईश्वर को न मानने वाला	हरषै	= खुश होना
बेपीर	= बेदर्द	सनेह	= प्रेम
बापुरो	= बेचारा	कंचन	= सोना
मिताई जोग	= मित्रता के लायक	मेह	= बादल
सुजन	= सज्जन	मद	= घमंड
पोहिये	= गूँथिए	लोभ	= लालच
मुक्ताहार	= मोतियों का हार	पंडित	= विद्वान
बिथा	= पीड़ा	जौ लौं	= जब तक
गोय	= छिपाना	तौ लौं	= तब तक
अठिलैहैं	= हँसी उड़ाएँगे		

आइए, यह भी जानें—

ब और व वर्णों की पहचान और इनके प्रयोग में अंतर:

इस पाठ में कबीर, बबूल, गरीब, बुराई और बगुला जैसे शब्द आए हैं। इन शब्दों में **ब** का प्रयोग हुआ है। इसी तरह आवत, वहाँ, पावै जैसे शब्दों में **व** का प्रयोग किया गया है। **ब** और **व** के फर्क को समझिए। अक्सर लोग इस फर्क को नहीं समझते और **ब** की जगह **व** तथा **व** की जगह **ब** का प्रयोग करने की गलती करते हैं। इससे शब्द गलत हो जाता है। कभी-कभी अर्थ भी बदल जाता है।

जैसे— **दवा** देना और **दबा** देना

इसमें दोनों के अर्थ अलग-अलग हैं।

न और ण वर्णों की पहचान और इनके प्रयोग में अंतर:

अनेक, समान, मन, कंचन जैसे शब्दों को देखिए। इनमें न का प्रयोग हुआ है। इसी तरह रामायण, कल्याण और प्राण में ण का प्रयोग हुआ है। दोनों के बोलने और लिखने के फर्क को समझिए। कहीं-कहीं लोग रामायण को रामायन बोलते या लिखते हैं। कल्याण को कल्यान बोलते या लिखते हैं। सही शब्द रामायण और कल्याण हैं।

अभ्यास

1. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) दूसरे की पीड़ा न समझने वाले को क्या कहते हैं?

.....

(ख) प्रेम का धागा क्यों नहीं तोड़ना चाहिए?

.....

(ग) अपने मन की पीड़ा दूसरों से क्यों नहीं कहनी चाहिए?

.....

(घ) कैसे लोगों के घर नहीं जाना चाहिए?

.....

2. नीचे लिखी पंक्तियाँ पूरा कीजिए:

● करे बुराई सुख चहै, ...

● रहि मन धागा प्रेम का, ...

● रहि मन निज मन की बिथा, ...

3. रेखा से मिलाकर शब्दों के सही जोड़े बनाइए:

जैसे-	मन काला	मंत्र है
	रोपै पेड़	प्रेम का
	रहिमन धागा	मनाइए
	बसीकरन इक	तन ऊजरा
	तुलसी तहाँ	बबूल का
	टूटे सुजन	न जाइए

4. नीचे लिखे प्रश्नों के चार-चार संभावित उत्तर दिए गए हैं। सही उत्तर के आगे (✓) का निशान लगाइए:

- जो दूसरों के साथ बुरा करता है, उसे—

(क) दुख नहीं मिलता () (ख) सुख नहीं मिलता ()

(ग) घर नहीं मिलता () (घ) कुछ नहीं मिलता ()

- कृष्ण सुदामा के—

(क) शत्रु थे () (ख) भाई थे ()

(ग) मित्र थे () (घ) पुत्र थे

- दूसरों से अपनी पीड़ा कहने पर लोग—

(क) मारेंगे () (ख) मदद करेंगे ()

(ग) गुस्सा करेंगे () (घ) मज़ाक उड़ाएँगे ()

5. नीचे लिखी पंक्तियाँ तुलसी, कबीर, रहीम में से किस कवि ने लिखी हैं, उनका नाम लिखिए:

- कहाँ सुदामा बापुरो, कृष्ण मितार्ई जोग॥

- रोपै पेड़ बबूल का, आम कहाँ ते होय॥

- आवत ही हरषै नहीं, नैनन नहीं सनेह।

- विपति पड़े दुख बाँटिए, सो लाखन में एक॥

6. सही शब्द के आगे (✓) का निशान लगाइए:

वगीचा	बगीचा	वढ़ई	बढ़ई
रावण	रावन	ऋन	ऋण
भाषण	भाषन	पुराण	पुरान
साबन	सावन	वालक	बालक

आइए, करके देखें—

- इस पाठ के दोहे याद करिए। उन्हें दूसरों को सुनाइए। उन पर चर्चा कीजिए।
- कबीर, रहीम और तुलसी पर पुस्तकें ढूँढ़कर पढ़िए। इनके बारे में और अधिक जानकारी जुटाइए।
- कबीर, रहीम, तुलसी के दोहों के कैसेट और सी. डी. भी बाज़ार में उपलब्ध हैं। उन्हें लाकर सुनिए।

अब यह जानिए

- कबीर एक संत और भक्त कवि थे। उनके नाम पर कबीर पंथ चला। आज भी कबीर के लाखों अनुयायी हैं, जिन्हें कबीर पंथी कहा जाता है। कबीर के दोहे और पद लोक जीवन में आज भी कहे और सुने जाते हैं।
- रहीम का पूरा नाम अब्दुरहीम खानखाना था। वे मुगल सम्राट अकबर के मंत्री और सेनापति थे। रहीम एक अच्छे कवि भी थे। उनके दोहे लोगों की जुबान पर बसे हैं।
- तुलसीदास राम के अनन्य भक्त थे। उन्होंने रामचरितमानस की रचना की, जो आज भी घर-घर में पढ़ी-सुनी जाती है।